











WELCOME UMINIED CLASSES

Like Video and Subscribe our channel







```
वे शस्यांशा जो शब्द के अंत में जुड़कर
प्रभी परिवर्तिय कर दे उन्हें प्रत्यय कहते?
* प्रत्यम का कोई अर्थ नहीं होता।
       उदा > बच्या + पन = बचपम
```

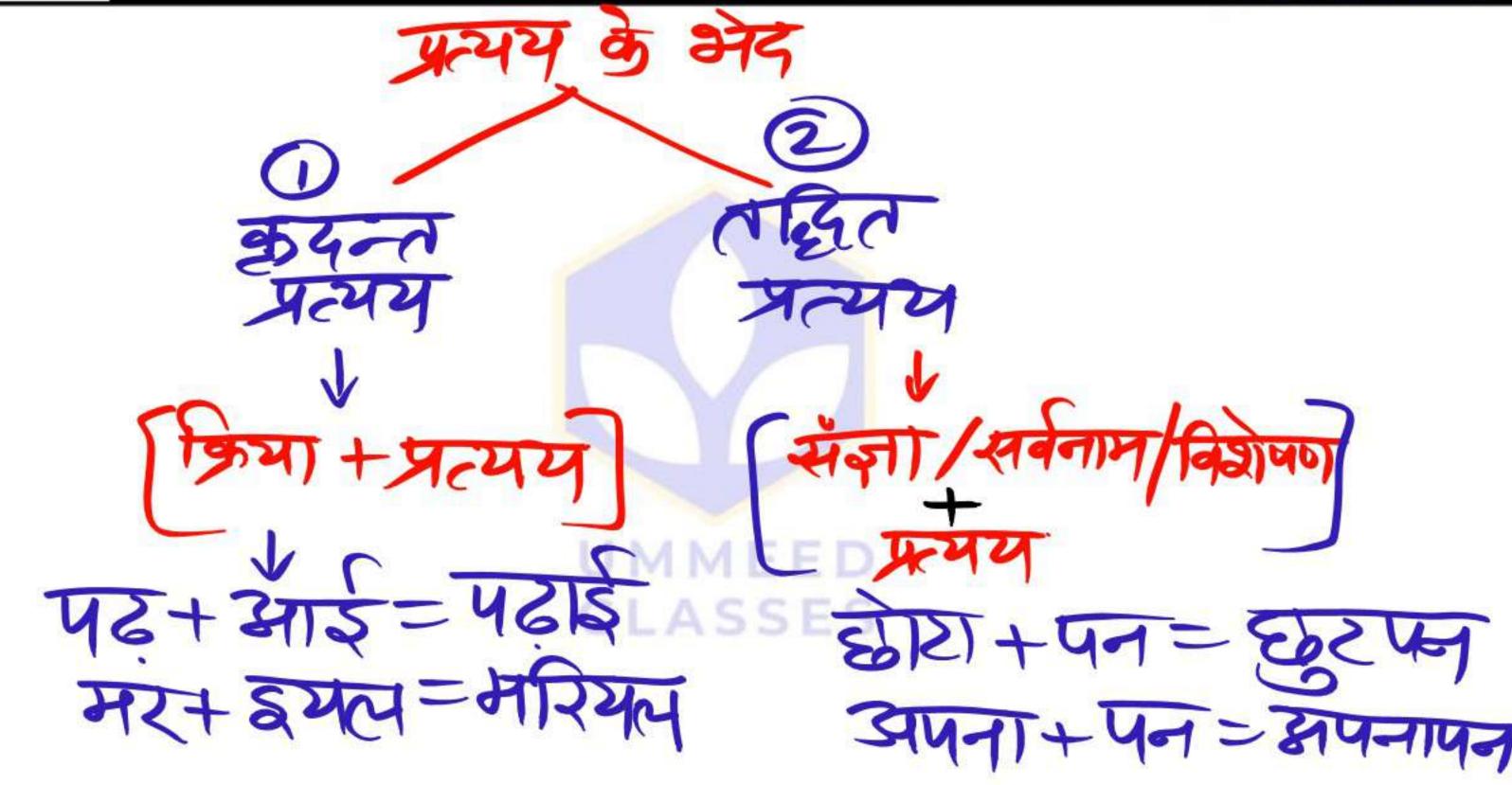




प्रत्यय के नियम :-) प्रत्यय बाह्य के अन्त में जुड़ते है। 2) प्रत्यय बाह्य अग्डार में वृद्धि अस्ते है। 3) प्रत्यय का कीई अर्थ नहीं होता। 4) प्रायय में संध्य के नियम लागू नहीं होते। 5) प्रत्यय जिस शब्द में जोड़ा जाता है उसकी अतिम असर प्रायः हमन्त ()माना जाताही

















करिवाचक कुदन्त प्रत्यय: - जब किसी फ्रिया/मूल आतु के साथ प्रत्यय का प्रयोग किया जाए और वह क्रा के अर्थ का वाध्य कराए, कर्तवान्यम क्रयन्त प्रत्यप क्रम्भा उदा -> (भड़ + आकू = लड़ाकू पढ + आक्र = पटाक्र गा + स्या = गरेपा





कर्मवाचक क्रफ्त प्रथय ने अब किसी क्रिया । मूल के साथ प्रत्यय का प्रयोग किया जाए अने वह कर्म के अर्थ का बोध कराए, कर्मवाच्य करन्त प्रयो उद्याः आह + नी = ओहनी खा + ना = खाना





करण वाचक कायन्त प्रत्यय :- जब क्रिया/सूल के साध प्रत्यय का प्रमोग किया जाए और वह किसी साधन का बाध्य जराए, करणवाच्य क्रया प्रत्यय कहलाता है। उदाः – साड + क > आडू

फ्रेक मानी = फ्रॅंकनी ब्रहारना + ई = ब्रहारी



9269100222

4) माववाचक श्रदना प्रत्यय ६ अव किया/मूल प्राम, के साथ प्रत्यय का प्रयोग किया जाए और वह भाव के अर्थ का बोध कराए, भाववाचक श्रदन्त प्रत्यय कहलाता है।

उदा -> (भड़ + आई = (भड़ाई मस्कुरा+आहर = मस्कुराहर अवरा + आहर = धकराहर





चक कप-र प्रत्ययः अब किसी क्रिया हिल के साथ प्रत्यय का प्रयोग किया जाए और वह क्रिय के अर्थ का ही बोध्य कराए, क्रियाबीध्यक कुयन्त













